अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – भारतीय साहित्य में नारी (1-20)

	प्रस्तावना
1.1	*नारी के विविध रूप*
1.1.1	प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी के विविध रूप
1.1.1.1	देवी–रूपा नारी
1.1.1.2	मातृ–रूपा नारी
1.1.1.3	पत्नी–रूपा नारी
1.1.1.4	कन्या–रूपा नारी
1.1.2	आदिकालीन हिन्दी साहित्य में नारी
1.1.3	मध्यकालीन साहित्य में नारी के विविध रूप
1.1.3.1	निर्गुण भक्तिसाहित्य में नारी के विविध रूप
1.1.3.2	सगुण भक्तिसाहित्य में नारी के विविध रूप
1.1.4	आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी के विविध रूप
1.2	*नारी का नैसर्गिक या प्राकृत रूप*
1.2.1	नारी का नैसर्गिक या प्राकृतिक पत्नी-रूप
1.2.2	नारी का नैसर्गिक या प्राकृतिक माता-रूप
1.3	*नर–नारी : व्यक्तित्व विकास की अवधारणा*
1.3.1	नर-नारी विकास के संदर्भ में भारतीय एवं पाश्चात्य विचार
1.3.2	आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप व्यक्तित्व विकास
✷	*निष्कर्ष*

द्वितीय अध्याय – हिन्दी उपन्यासों में नारी (21-42)

	प्रस्तावना
2.1	*उपन्यास विकास यात्रा*
2.1.1	प्रेमचन्द-पूर्व उपन्यासों में नारी
2.1.1.1	तिलस्मी उपन्यासों में नारी
2.1.1.2	जासूसी उपन्यासों में नारी
2.1.1.3	ऐतिहासिक एवं पौराणिक उपन्यासों में नारी
2.1.1.4	सामाजिक उपन्यासों में नारी
2.1.1.5	उपदेशात्मक उपन्यासों में नारी
2.1.1.6	अनूदित उपन्यासों में नारी
2.1.2	प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासों में नारी
2.1.2.1	प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी
2.1.2.2	प्रसाद के उपन्यासों में नारी
2.1.2.3	वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी
2.1.2.4	पाण्डेय बेचनशर्मा 'उग्र' के उपन्यासों में नारी
2.1.2.5	अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी
2.1.3	प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में नारी
2.1.3.1	मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा के उपन्यासों में नारी
2.1.3.2	साम्यवादी विचारधारा के उपन्यासों में नारी
*	*निष्कर्ष*

तृतीय अध्याय – जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व–कृतित्व (43-60)

3.1	*व्यक्तित्व*
3.1.1	जीवन-परिचय
3.1.2	जन्म-वंश परम्परा

3.1.3	बाल्यकाल
3.1.4	शिक्षा-दीक्षा
3.1.5	विवाह और सन्तति
3.1.6	साहित्यिक जीवन
3.1.7	प्रारंभ और उत्कर्ष
3.1.8	अन्तिम समय
3.2	कृतित्व
3.2.1	कवि
3.2.1.1	प्रारम्भिक रचनाएँ
3.2.1.2	प्रौढ़ गीत काव्य
3.2.1.3	प्रसाद का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य 'कामायनी'
3.2.2	गद्यकार
3.2.2.1	नाटक
3.2.2.2	कहानी
3.2.2.3	निबंध
3.2.2.4	उपन्यास
✷	निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – प्रसाद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय (61-82)

	प्रस्तावना
4.1	कंकाल उपन्यास की कथावस्तु
4.1.1	कंकाल उपन्यास की कथागत विशेषताएँ
4.1.1.1	शुद्ध भारतीयता में डूबा 'कंकाल'
4.1.1.2	सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति का बिगुल ध्वनि
4.1.1.3	स्त्री–पुरुष संबंध पर प्रकाश

4.1.1.4	व्यक्ति स्वतंत्रता की माँग
4.1.1.5	हिंदू स्त्री का मार्मिक चित्रण
4.1.1.6	'वर्णसंकर' समस्या पर गहरा चिंतन
4.1.1.7	नवजागरण की आवाज
4.2	*'तितली' उपन्यास की कथावस्तु*
4.2.1	तितली उपन्यास की कथागत विशेषताएँ
4.2.1.1	सफल ग्रामचित्रण
4.2.1.2	सामंतीय व्यवस्था का चित्रण
4.2.1.3	गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव
4.2.1.4	भारतीय संस्कृति की महत्ता का बखान
4.2.1.5	सामाजिक विषमता का प्रभावी चित्रण
4.2.1.6	पारिवारिक विघटन का वास्तव चित्रण
4.2.1.7	अंतर्जातिय विवाह तथा प्रेमविवाह को स्वीकृति
4.3	*'इरावती' उपन्यास की कथावस्तु*
4.3.1	इरावती उपन्यास की कथागत विशेषताएँ
4.3.1.1	स्वर्णयुग का अवतरण
4.3.1.2	ऐतिहासिक प्रणय गाथा
4.3.1.3	इतिहास में डूबी हुई भावपीठिका
4.3.1.4	गांधीवादी आदर्श
4.3.1.5	कलाप्रेमी
4.3.1.6	नारी सम्मान
✷	*निष्कर्ष*

पंचम अध्याय – प्रसाद के उपन्यासों में नारी–पात्र–वर्गीकरण

(83-114)

	प्रस्तावना
5.1	कथा की दृष्टि से नारी–पात्र
5.1.1	प्रमुख नारी-पात्र
5.1.1.1	किशोरी
5.1.1.2	तारा
5.1.1.3	तितली
5.1.1.4	शैला
5.1.1.5	इरावती
5.1.1.6	कालिन्दी
5.1.2	गौण नारी-पात्र
5.1.2.1	घण्टी
5.1.2.2	गाला
5.1.2.3	लतिका
5.1.2.4	सरला
5.1.2.5	सुभद्रा
5.1.2.6	नन्दो चाची
5.1.2.7	श्यामदुलारी
5.1.2.8	माधुरी
5.1.2.9	राजकुमारी
5.1.2.10	नन्दरानी
5.1.2.11	अनवरी
5.1.2.12	मलिया

5.1.2.13	उत्पला
5.1.2.14	मणिमाला
5.2	*सामाजिक स्थिति की दृष्टि से नारी–पात्र*
5.2.1	पत्नी रूप में नारी
5.2.2	प्रेमिका रूप में नारी
5.2.3	माता रूप में नारी
5.2.4	विधवा रूप में नारी
5.2.5	वेश्या रूप में नारी
5.2.6	अन्य नारी पात्र
5.3	*वैचारिक दृष्टि से नारी–पात्र*
5.3.1	परंपरावादी नारी
5.3.1.1	तितली
5.3.1.2	श्यामदुलारी
5.3.1.3	नन्दरानी
5.3.2	विद्रोही नारी
5.3.2.1	घण्टी
5.3.2.2	गाला
5.3.2.3	कालिन्दी
5.4	*मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से नारी–पात्र*
5.4.1	सामान्य नारी
5.4.1.1	श्यामदुलारी
5.4.1.2	माधुरी
5.4.1.3	राजकुमारी
5.4.2	असामान्य नारी

5.4.2.1 लतिका

5.4.2.2 घण्टी

✷ निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय – जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी–पात्रों का अंतःबाह्य चित्रण (115-138)

प्रस्तावना

6.1 अंतरंग चित्रण

6.1.1 अन्तर्द्वन्द्व

6.1.2 अहम् भाव

6.1.3 उदात्तीकरण

6.2 बहिरंग चित्रण

6.2.1 पात्र-परिचय

6.2.1.1 तारा (कंकाल)

6.2.1.2 घण्टी (कंकाल)

6.2.1.3 सरला (कंकाल)

6.2.1.4 रामा (कंकाल)

6.2.1.5 चन्दा (कंकाल)

6.2.1.6 शैला (तितली)

6.2.1.7 श्यामदुलारी (तितली)

6.2.1.8 माधुरी (तितली)

6.2.1.9 राजकुमारी (तितली)

6.2.1.10 उमा (इरावती)

6.2.1.11 इरावती (इरावती)

6.2.1.12 कालिन्दी (इरावती)

6.2.1.13 मणिमाला (इरावती)

6.2.2 वेशभूषा

6.2.2.1 'कंकाल' उपन्यास में नारी वेशभूषा चित्रण

6.2.2.2 'तितली' उपन्यास में नारी वेशभूषा चित्रण

6.2.2.3 'इरावती' उपन्यास में नारी वेशभूषा चित्रण

6.2.3 क्रिया प्रतिक्रिया

6.3 *नाटकीय चित्रण*

6.3.1 तारा (कंकाल)

6.3.2 घण्टी (कंकाल)

6.3.3 बन्जो (तितली)

6.3.4 राजकुमारी (तितली)

6.3.5 श्यामदुलारी (तितली)

6.3.6 इरावती (इरावती)

6.3.7 कालिन्दी (इरावती)

✷ *निष्कर्ष*

✷ *उपसंहार* (139-144)

✷ *संदर्भ ग्रंथ सूची* (145-149)

आधार ग्रंथ सूची

सहायक ग्रंथ सूची

कोश ग्रंथ

पत्रिका

मराठी – ग्रंथ